भगत रविदास – सबद १६

दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेकै ॥

रागु सोरठि, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ६५८

दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेकै ॥
राजे इंद्र समसरि ग्रिह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै ॥१॥
न बीचारिओ राजा राम को रसु ॥
जिह रस अन रस बीसरि जाही ॥१॥ रहाउ ॥
जानि अजान भए हम बावर सोच असोच दिवस जाही ॥
इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥२॥
कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ ॥
कहि रविदास उदास दास मति परहरि कोपु करहु जीअ दइआ ॥३॥३॥

सार: 'जानते हुए अज्ञानी', उस व्यक्ति को कहते हैं जिसका ज्ञान अभी तक वास्तविक बोध में नहीं बदला हो। इस स्थिति में, सत्य मन में संचित जानकारी की तरह रहता है और इंद्रियों के अनुभव प्रधान एवं ज़रूरी हो जाते हैं। जैसे-जैसे ध्यान भटकता है, स्पष्टता धुंधली पड़ जाती है और अज्ञान प्रवेश कर जाता है, इससे स्पष्ट होता है कि जानना कैसे अनजान होने में बदल सकता है। थोड़ा सा आत्मचिंतन यह उजागर कर देता है कि जीवन हमें सद्गुणों को अपनाने का एक दुर्लभ मौका देता है लेकिन हम ध्यान भटकने की वजह से यह मौका आसानी से खो देते हैं। वास्तव में, दुर्लभ सिर्फ़ पैदा होना नहीं है बल्कि अस्तित्व के सार को पहचानना और उसी स्पष्टता से जीवन जीने की क्षमता है। क्षमता की संभावना और उपलब्धि के बीच का अंतर दिखाता है कि हमने क्या पोषित किया है। अंततः यह गहन होते हुए भी सरल सत्य है कि जागरूकता हमारे पास होती है फिर भी हम अक्सर उसे नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेकै ॥

जीवन नेक बनने का एक दुर्लभ मौका देता है फिर भी समझ और बुद्धि की कमी के कारण यह अक्सर बर्बाद हो जाता है। इससे पता चलता है कि जब स्पष्टता नहीं होती तब हमारी संभावनााओं की क्षमता भी कम हो जाती है।

राजे इंद्र समसरि ग्रिह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै ॥१॥

यदि किसी के पास राजसिंहासन हो और सबसे ऊंचे स्वर्ग के अधिकारी इंद्र के समान निवास हो लेकिन सर्वव्यापी चेतना के प्रति भक्ति न हो तब उसका वास्तविक मूल्य क्या है? यह आंतरिक संबंध के अभाव में बाह्य सत्ता की शक्ति के खोखलेपन की ओर इशारा करता है। (१)

न बीचारिओ राजा राम को रसु ॥

मन ने संप्रभु, सर्वव्यापी वास्तविकता के सार पर विचार नहीं किया है और न ही उसे संजोया है। यह चेतना के आनंद का अनुभव करने का अवसर चूकने को दर्शाता है।

जिह रस अन रस बीसरि जाही ॥१॥ रहाउ ॥

इस सार के रस का अनुभव होता है तब अन्य सभी सुख फीके पड़ जाते हैं। यह दर्शाता है कि चेतना प्राप्त करने का आनंद इंद्रियों के सुखों से कहीं श्रेष्ठ है। (१)(विराम)

जानि अजान भए हम बावर सोच असोच दिवस जाही ॥

ज्ञान अज्ञान में बदल सकता है और मेरी मूर्खता और नासमझी में दिन बीत जाते हैं। यह स्मरण कराता है कि ध्यान की कमी हमें उस से दूर कर देती है जो वास्तव में महत्वपूर्ण है, भले ही हम जानते हों कि हमें उसे बेहतर प्राथमिकता देनी चाहिए।

इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥२॥
इंद्रियाँ बलवान हो जाती हैं, बुद्धि-विवेक कमज़ोर पड़ जाते हैं और आध्यात्मिक समझ दूर रहती है। यह दर्शाता है कि जब इंद्रियों की प्रवृत्ति मन पर हावी हो जाती है तब वह ज्ञान और व्यापक समझ में बाधा बनती हैं। (२)

कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ ॥
कहा कुछ जाता है और किया कुछ और जाता है, कुछ समझ में नहीं आता क्योंकि माया अपरंपार है। यह कथनी-करनी के अंतर से उपजी विखंडित, पाखंडी मनःस्थिति को उजागर करती है जिसमें घोषणाएं और व्यवहार मेल नहीं खाते।

कहि रविदास उदास दास मति परहरि कोपु करहु जीअ दइआ ॥३॥३॥
रविदास कहते हैं कि वैराग्य के माध्यम से, साधक विनम्र हो जाता है, बुद्धि क्रोध त्याग देती है और हृदय में करुणा जागती है। यह वैराग्य को बाहरी त्याग से बदलकर नकारात्मकता को छोड़ने के आंतरिक कार्य के रूप में परिभाषित करता है ताकि सकारात्मकता के लिए रास्ता बन सके। (३)(३)

तत्त्व: भक्त रविदास दया यानी करुणा और परमार्थ, जो जीवन के परम अर्थ को दर्शाता है, के महत्व पर ज़ोर देते हैं। यह गहरे भाव हमें क्रोध और नफ़रत से दूर रहने के लिए प्रेरित करते हैं और याद दिलाते हैं कि दूसरों के प्रति सहानुभूति पैदा करने के लिए सबसे पहले हमें स्वयं के प्रति करुणावान होना आवश्यक है। वह दया को फिर से परिभाषित करते हैं, न केवल दयालुता के बाहरी प्रदर्शन के रूप में बल्कि एक ज़रूरी आंतरिक यात्रा के रूप में जो हमें हमारे नकारात्मक विचारों की विनाशकारी पकड़ से मुक्त करती है। यह परिवर्तनकारी प्रक्रिया हमारी अंतरात्मा को पोषित करती है जिससे मन गहन अर्थों को खोज पाता है जिसमें टकराव सद्भाव में बदल जाता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com